उषा प्रियवंदा व मन्नू भंडारी के उपन्यासो मे नारी का चित्रण

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय

में हिन्दी विषय में उपाधि हेतु

शोध प्रबन्ध की रूप रेखा

विषय : हिन्दी

प्रस्तुतकर्ता

अनिता जाट

रजि न. JVR-1/19/1026

शोध निर्देशक

डॉ. चित्रा

हिन्दी विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर (राज.)

2019

प्रस्तावना

उपन्यास साहित्य की आधुनिक विधा है जिसका प्रारंभ हम 19वीं शताब्दी से मानते है। इसका मूल आधार वास्तविका काल्पनिक या मिश्रित कथा होती हैं भारत मे उनके लेखको ने उपन्यास विद्या का प्रयोग समाज को नई दिशा दी है।

उपन्यास के तत्वो विषय शैली पर बडे विस्तार और गंभीरता से मंथन किया गया है। साहित्य की सभी विधाओं मे उपन्यास विद्या एकमात्र ऐसी विद्या है जिसमे मूल कथा के साथ साथ अनेक अन्य कथा धाराएं चलती है जबकि कहानी जैसी विद्या मे केवल एक कथा चलती है।

उपन्यास मे कौतुहल के साथ–साथ मानवीय भावनाओ को प्रकाशित करना इसका कूल उद्धेश्य होता है। और किसी ना किसी सिद्धांत पर इसका निर्माण किया जाता है। इस विद्या के माध्यम से अत्यंत व्यापक स्तर पर जीवन के यथार्थ रूप को कल्पना के सहारे एक गद्यकार इस तरह पाठक के सामने प्रस्तुत करता है। जिसमे पाठक को मानवीय भावो की अनुभूति होती है।

उपन्यास को अंग्रेजी मे नोवेल गुजराती मे नवलकथा मराठी मे कादम्बरी बंगला तथा हिंदी मे उपन्यास कहा जाता है। उपन्यास एक विचित्र और वर्णन प्रधान साहित्य शिक्षा है उपन्यास मे चरित्र की मीमांसा अधिक तटस्थ और निरपेक्ष रूप मे होती है। उपन्यास एक प्रकार से सत्य की खोज और यथार्थ एवं असत्य को ध्वंस करने वाला हथियार है।

परिभाषा

फ्रांसीसी बेकन – उपन्यास कल्पित इतिहास है।

फीलि्डंग के अनुसार – उपन्यास एक मनोरंजनपूर्ण गद्य महाकाव्य है।

जाजै मूर के अनुसार – उपन्यास समकालीन इतिहास के अतिरिक्त और कुछ नही है। वह जिस युग मे हम जी रहे उसके सामाजिक परिवेश का बिल्कुल पूर्ण और सही सही पुनर्निर्माण है।

राल्फ फॉक्स के अनुसार – उपन्यास कला का प्रथम गद्य रूप है जो मानव को समग्रता से समझने तथा अभिव्यक्त करने की चेष्टा करता है।

भारतीय विद्वान

जेनेन्द्र कुमार – पीडा मे परमात्मा बसता है और मेरे उपन्यास आत्मपीडन की कथा है।

प्रेमचंद के अनुसार – मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।

भागरीय मिश्र के अनुसार – युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली मे स्वाभाविक जीवन की पूर्ण व्यापक झांकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य उपन्यास है।

डॉ. श्यामसुन्दर दास के अनुसार	– उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।
नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार	– उपन्यास मे आजकल गद्यात्मक कृति का अर्थ लिया जाता है पद्य बद्ध उपन्यास नही हुआ है करते उपन्यास वह काल्पनिक कृति है जो माध्यम से आख्यान विशेष की सहायता से लेकर सामाजिक जीवन के किसी स्वरूप का यथार्थ आभास देती हुई उक्त जीवन की मार्मिक व्याख्या करती है।

उपन्यास का वास्तविक संबंध जीवन से होता है। महान घटनाओं की खोज नही करता उसका रचना क्षेत्र तो दैनिक जीवन की घटनाओ से है।

उषा प्रियवदा व मन्नू भण्डारी आधुनिक यथार्थवादी उपन्यासकार है इस शोध कार्य मे इन दोनो उपन्यासकारो के उपन्यासो मे नारी के चित्रण का अनेक पक्षों मे अध्ययन किया जायेगा।

मैने अर्थात शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध को पंचम अध्यायो मे विभाजित किया है।

साहित्य की समीक्षा

1. उपन्यास की संरचना एक आलोचना – गोपाल राय प्रकाशन राजकमल प्रकाशन

उपन्यास एक अमृत रचना वस्तु है। तो इसका एक स्वरूप भी है जिसे उपन्यासकार निर्मित करता हैं दूसरा पक्ष वह है। जिसे पाठक अपनी चेतना मे निर्मित करता है। पर उपन्यास का रूप चाहे जितना भी अमूर्त और पाठ सापेक्ष हो वह होता जरूर है, और यह किस तरह बनता है। पाठक की चेतना मे वह कैसे रूप ग्रहण करता है।

2. मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य मे यथार्थ बोध

चारूमति देवी

हैदराबाद विश्वविद्यालय 2002

अपने शोध कार्य मे पाया कि मन्नू भंडारी के कथा साहित्य मे इन्होने संपूर्ण युग चेतना, समस्या द्वंदता, नारी चेतना टुटते परिवेश, संबंधो को दर्शाया है। आधुनिकता की झलक दृष्टित हुई।

3. उषा प्रियवदा का रचना संसार – समीक्षा

डॉ. रूचिरा ढींगरा एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

सहचर त्रैमासिक ई–पत्रिका ISSN–2395.2873

25 अक्टूबर 2017

उषा जी का साहित्य लेखन का केन्द्र नारी उसकी सख दुखात्मक स्थितियां, अंतर्द्वद, आकाश का वर्णन करना रहा।

4. एक प्रख्यात लेखिका के जीवनन का लेखा जोखा – डॉ. मुध संधु प्रोफेसर

हिंदी विभाग, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर पंजाब प्रकाशन– राधाकृष्ण, नई

दिल्ली 2008

समीक्षा मे मन्नू जी के व्यक्तित्व पक्ष को उजागर किया है। नारी के प्रति संवेदना, अस्मिता संघर्ष समाज की रूढियों। आधुनिकता का प्रभाव, व्यक्तिगत जीवन की कुशलता का विवरण है।

5. उषा प्रियवदा के कथा साहित्य के स्त्री स्वत्व की तलाश

शोधार्थी – टेस जोस

निर्मला महाविद्यालय मुवाटूपुषा 2013

उषा जी के चिंतन मे मुख्य रूप से आधुनिक संस्कृति की ऊब घुटन, तनाव, अजनबीपन, उससे उत्पन्न संत्रास, बनते बिगडते रिश्ते, बनती बिगडती संवरती जिन्दगी पढे–लिखे व्यक्ति की मानसिक यंत्रणा आदि मे मुख्य रूप से नारी यंत्रणा को सर्जनात्मक स्तर पर अंकित किया। मानवीय गुणो की दृष्टि से नारी पुरूष से अधिक मानवीय महानताओं से युक्त है उसे वह स्थान नही मिला जिसकी वह अधिकारणी है आज की नारी मे आमूल परिवर्तन आथा समय के साथ परिपाटी बदल रही है।

प्रथम अध्याय

साहित्य के इतिहास मे नारी के स्वरूपप का अध्ययन

साहित्य के इतिहास मे अनेक विधाओ के द्वारा नारी के स्वरूप को पात्रो के माध्यम से चित्रित करते रहे। नाटक, कहानी, एकांकी निबंध, उपन्यास, काव्य शैली मे नारी के चरित्र को उद्घाटित किया।

प्राचीन साहित्य मे नारी को गौरवमय स्थान प्रदान किया गया, रामायण महाभारत ग्रंथो मे नारी को उच्च स्थान दिया साथ ही समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण भी दर्शाया।

भारतेन्दु जी और उनके पूर्व व समकालीन साहित्यकारो ने अपनी विधाओ मे पुरानी परंपरा के आधार पर ही अपने नारी पात्रो को चित्रित करते रहे। जबकि प्रसाद ने अपने साहित्य मे नारी को पहली बार आत्मगौरव प्रदान किया प्रसादोत्तरकालीन साहित्यकारो ने नारी को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया। तत्कालीन लेखको व प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासो मे नारी से समस्याओ को केन्द्र मे रखा है।

तत्कालीन परिस्थितयो नारी जीवन को किस तरह प्रभावित कर रही है, प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक उसके स्थान मे परिवर्तन होता रहा। अनेक साहित्यकारो ने अपनी अनेक विधाओ मे नारियो का दृष्टिकोण हर क्षेत्र मे स्पष्ट रहा है।

द्वितीय अध्याय

उषा प्रियवदा व मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

उषा प्रियवदा का जन्म 24 दिसम्बर 1930 कानपुर (उत्तरप्रदेश) मे सक्सेना कायस्थ के एक प्रतिष्ठित एवं शिक्षित परिवार मे हुआ था उषाजी के पिता का देहांत इनके बचपन मे ही हो गया था इनके पिता गांधीवादी थे।

इनकी माता का नाम प्रियवदा था जो बडा ही कवित्वपूर्ण और ध्वनिरंजक था लेकिन इनकी माता ने अपनी बेटी का नाम छोटा ही रखा ''उषा''। उषा जी ने ''कल्पना'' पत्रिका मे प्रकाशित अपनी कहानी ''पूर्ति'' मे अपने नाम के साथ प्रियवदा नाम भी जोडा। उषा जी मे लेखन कार्य के प्रति ललक प्रारंभ से ही थी। 6 वर्ष की आयु मे उषा जी व उनकी माता कानपुर मे अपने चाचा के घर आकर रहे। परंतु वे उस घर का हिस्सा नही थे क्योंकि घर उनके पिता के छोटे भाई की पत्नि को दे दिया गया था क्योंकि वह विधवा थी और उन्हे बेटे पालने थे और मेरी माँ को कुछ नंही दिया गया वह भी विधवा थी पर लडकियाँ की माँ थी। समाज की इस क्रुरता का प्रभाव उनके मानस पर गहरा प्रभाव छोड गया और समझ लिया कि भारतीय समाज और संबधी एक आश्रयहीन महिला के प्रति कितने क्रूर हो सकते है। मेरी माँ घर का खाना बनाती फिर भी उन्हे यह अधिकार नही था कि वह एक पराठा या पुरी बनाकर मुझे दे सके समाज के इस दोगले व्यवहार से उनके बालमन पर गहरी चोट की। उषा जी को अपने ननिहाल जाना भी कम रूचिकर था क्योंकि वहां भी उन्हे लडकी कहकर अनेक प्रतिबंध लगाये जाते थे जो उन्हे पसंद नही थे।

उषा जी की प्रारंभिक शिक्षा कानपुर मे हुई। छठी कक्षा के बाद अपने ननिहाल मे शिक्षा ली। इन्होने अपनी आरंभिक कहानियाँ सरिता नामक पत्रिका मे छपवाई जिसके लिये इन्हे प्रति कहानी 20 रूपये मिलते जिनका ये अपनी माँ के लिये साडी खरीदती।

उच्च शिक्षा उषा जी ने इलाहाबाद मे की जिसके लिये इन्हे इनके दादाजी ने प्रोत्साहित किया। यहां इन्हे अनायास ही लेखको व कवियो की संगति प्राप्त हुई जिससे इनका साहित्यिक जीवन और सुदृढ हुआ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय मे पी.एचडी. किया और आगे इंडियाना क विश्वविद्यालय मे अमेरिकन साहित्य पढ रही थी। उषा जी को फुलब्राईट स्कोलरशिप मिली जिससे वह अमेरिका जाकर पढी। यहां ये दो वर्ष के अध्ययन हेतु आई थी परंतु अपनी योग्यता के बलबूते वे विस्कांसित विश्वविद्यालय मैडीसन मे दक्षिणेशियाई विभाग मे प्रोफेसर बन गई और वही विवाह कर लिया उनके पति अमेरिका मे भाषाविद ''फिक विल्सन'' हार्वर्ड युनिवर्सिटी मे प्रोफेसर है। दोनो शोरवुड मे अपना सुखी दाम्पत्य जीवन जी रहे है।

उषा जी ने पारिवारिक परिवेश को साहित्यकार के लिये आवश्यक माना क्योंकि एक साहित्यकार उन्ही परिवेश से पात्रो को चुनकर अपने भावो को अभिव्यक्त कर पाता है।

वापसी कहानी इन्होने इलाहाबाद मे रहते हुए लिखी। उषा जी का साहित्य उनके जीवानुभव का प्रतिबिम्ब है। इन्होन कथा साहित्य को लेखन का आधार बनाया।

इनकी प्रथम कहानी ''लाल चूनर'' जो सरिता पत्रिका मे प्रकाशित हुई जो इनके लेखन का प्रथम सोपान है।

''उनकी जिन्दगी और गुलाब के फुल'' ज्ञानपीठ से तो पचपन खम्भे लाल दिवारे उपन्यास राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई। प्रारंभिक कहानी संग्रह फिर बसन्त आया सरिता प्रेस से प्रकाशित हुई। इनका व्यक्तित्व सदैव गतिशील रहा जो इनकी सर्जक प्रतिभा को विस्तारित होने को प्रेरित करता है। उषा जी का संपूर्ण व्यक्तित्व सुरूचिपूर्ण शिष्ट सृजनात्मक है। इसकी कारण

आज ये हिंदी साहित्य का गौरव बनी है। वे अपनी हर रचना मे घटना का बारीकी से वर्णन करती है।

अपनी रचनाओ के माध्यम से उषा जी ने समाज के हर पहलु को बडे ही सार्थक ढंग से पाठको के सामने रखा हे और समाज का यथार्थ चित्रण इन्होने किया है।

कहानी संग्रह –

1. फिर बसंत आया
2. जिन्दगी और गुलाब के फूल
3. एक कोई दूसरा
4. मेरी प्रिय कहानियाँ
5. कितना बडा झूठा
6. शून्य तथा अन्य रचनाएं
7. मेरी कहानियाँ
8. संपूर्ण कहानियाँ
9. बनवास

उपन्यास –

1. पचपन खम्भे लाल दीवारे
2. रूकोगी नही राधिका
3. शेषयात्रा
4. अन्तर्वशी
5. भया कबीर उदास

पचपन खम्भे लाल दीवारे

यह उपन्यास उषा जी के श्रेष्ठ उपन्यासो मे से एक है इसमे उषा जी ने एक ऐसी लडकी का चित्रण किया है जो अपने परिवार की आवश्यकताओ को पूरा करने के लिये अपने सपनो का गला घोट देती है और एकांकी जीवन जीने के लिये विवश हो जाती है।

रूकोगी नही राधिका

यह उपन्यास पहले धारावाहिक के रूप मे छपा था इसमे एक साथ पूर्व व पश्चिम की संस्कृतियो के बीच की खाई को ही खोला गया बल्कि इन संस्कृतियो मे दोनों तरफ से सामंजस्य न बिठा पाने वाले व्यक्ति की नियति व मोहभंग को नायिका राधिका के माध्यम से स्पष्ट किया है।

शेष यात्रा

इस उपन्यास मे नारी जीवन की त्रासद स्थितियो का एक ऐसा उदाहरण है जिसे शायद ही किसी प्रमाण की आवश्यकता हो। इस उपन्यास नायिका ने साहस और संघर्ष के साथ अपनी दारूण नियति को बदलने का अथक प्रयास किया है शायद ही हमे अन्य लेखिकाओ के साहित्य मे दृष्टित होती हो।

अन्तर्वशी

इसमे उन भारतीय परिवारो का उल्लेख है जो बेहतर अवसर की तलाश मे प्रवासी हो जाते है, और संघर्ष व मोहभंग का जो सिलसिला आरंभ होता है। उसका चित्रण है।

भया कबीर उदास

इस उपन्यास मे उषा जी एक नयी कथावस्तु लेकर उपस्थित हुई है। इसमे शरीर की पूर्णता–अपूर्णता का प्रश्न जो हमारे कोमल मन पर गहरा

प्रभाव डालता है उसे उजागर किया गया है। इसमे उषा जी ने फ्लैश बैक पद्धति और डायरी शैली का प्रयोग जो पूर्णता – अपूर्णता का वैचारिक द्वंद है उसे दूर करने का प्रयास हुआ है।

मन्नू भण्डारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्यप्रदेश के मानुपरा नामक छोटे गावं मे हुआ। यह गावं राजस्थान तथा मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित है। मन्नू भण्डारी का पूरा नाम महेन्द्रकुमारी है सबसे छोटी होने के कारण प्यार से मन्नू कहकर पुकारा जाने लगा इनकी माता का नाम अनुप कँवरी था वे अनपढ थी फिर भी यथाशक्ति अपने पति की मदद करती थी इनकी माता का व्यवहार बडा ही शालीन व स्नेहपूर्ण था इनके पिता सुखसंपत राय था। कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता थे व साहित्य के प्रति विशेष रूचि थी। इन्होने बीसवीं शताब्दी इंग्लिश शब्दकोश लिखी जो प्रसिद्ध रही थी। इनका संयुक्त मारवाडी परिवार था। मन्नू जी का बालपन और किशोरावस्था अजमेर में बीता।

इनकी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर के सावित्री गर्ल्स हाईस्कूल मे हुई अजमेर से इन्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की। कलकता विश्वविद्यालय से 1949 मे बी. ए. पास किया। काशी विश्वविद्यालय मे हिन्दी मे 1953 को स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की। कॉलेज मे अध्ययन के दौरान राष्ट्रभावना के जो बीच बचपन मे ही उन्हे अपने पिता से मिले थे वे अब आन्दोलन, हडतालो के रूप मे बाहर आने लगे थे। सन् 1959 मे राजेन्द यादव से उनका विवाह हुआ। साहित्य रूचि ने दोनो को मित्र से पति–पत्नि के रिश्ते मे बांधा। मन्नू जी की रचनाओ का विषय यथार्थ है जहां सुख–दुख उलझाव – सुलझाव सभी कुछ है लेकिन जो भी है वह जीवन का सत्य है।

जीवन की धडकन से भरतपुर स्थितियां विचार या समस्याएं ही उन्हे लिखने के लिए प्रेरित करती है। मन्नू जी की रचना प्रक्रिया का अंतिम बिन्दु अभिव्यक्ति की सप्रेंषणीयता है। इन्होने अपनी रचनाओ शिल्प प्रयोग पर ज्यादा ध्यान नही दिया बल्कि अनुभूति की अभिव्यक्ति और संवेदना को अपने रचना

कार्य मे महत्वपूर्ण स्थान दिया है। मन्नू जी ने हर व्यक्ति के दुख और समस्याओ को नितान्त निजी माना है। और एक रचनाकार अपनी रचना प्रक्रिया के माध्यम से दूसरो तक पहुंचना ही रचनाकार को संतोष प्रदान करती है।

इनकी प्रथम कहानी मै हार गई नया समाज पत्रिका मे प्रकाशित हुई। प्रथम स्वतंत्र उपन्यास आपका बेटी है तो यही सच है कहानी पर रजनीगंधा फिल्म बनी।

शरतचन्द की कहानी के आधार पर इन्होने स्वामी उपन्यास लिखा एखाने आकाश नाई पर जीना यहां फिल्म बनी।

मन्नू भण्डारी को महाभोज उपन्यास पर रामकुमार भुवाल्का पुरस्कार, भारतेन्दु हरिशचन्द्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने आपातकाल स्थिति के दौरान इनका पद्श्री पुरस्कार देने की घोषणा की लेकिन इन्होने लेने से इंकार कर दिया।

मन्नू जी के उपन्यास सामाजिक उपन्यासो की श्रेणी मे आते है। इन्होने कहानी व उपन्यास विधा मे माध्यम से राजनैतिक व सामाजिक समस्याओ को उजागर किया है महाभोज उपन्यास की कथावस्तु सामाजिक है परंतु परिवेश राजनीतिक होने के कारण आधुनिक समस्याओ एवं राजनीति मे दो कुचक्र चलाया है उसे पाठक के सामने रखा है। दाम्पत्य जीवन के मोहभंग विवाह विच्छेद टुटते पारिवारिक परिवेश घूटन, संत्रणा को प्रस्तुत किया है।

मन्नू जी ने मानव की मानसिक उलझनो, द्वंदो प्रेरणाओ एवं प्रवृतियों के अंकन पर विशेष ध्यान दिया है। इन्होने सामाजिक परिवेश को व्यक्तित्व के विकास मे प्रेरक शक्ति के रूप मे देखा है।

कहानी संग्रह

1. मै हार गई। 1957

2. तीन निगाहो की तस्वीर 1959
3. यही सच है 1966
4. एक प्लेट सैलाब 1968
5. त्रिशंकु 1978
6. आंखो देखा झूठ (बाल कहानी संग्रह)
7. नायक खलनायक विदूषक
8. श्रेष्ठ कहानियां
9. मेरी प्रिय कहानियां
10. सप्तवर्णा मै हार गई

नाटक

1. बिना दिवारो का घर
2. महाभोज (महाभोजन उपन्यास का रूपांतरण)

उपन्यास

1. आपका बंटी 1971
2. महाभोज 1976
3. एक इंच मुस्कान 1961
4. स्वामी 1982
5. कलवा (बाल उपन्यास) 1971

1. **आपका बंटी** – इस उपन्यास मे तलाकशुदा पति पत्नी के बच्चो पर पडने वाले प्रभाव को बडे मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।
2. **महाभोज** – इसमे मन्नू जी ने राजनीतिक षडयंत्रो व कुचक्रो का पर्दाफाश किया है।

3. **स्वामी –** यह लघुउपन्यास है जो शरतचन्द्र चटोपाध्याय के जीवन पर आधारित है। इसमे आत्म–भर्त्सना और आत्मधिकार एवं पापबोध से मुक्त कर मानवीय अन्तर्द्वद से फॅसकर भी नये मार्ग को सुझाया है। ऐसा मार्ग जो अनास्था से आस्था अविश्वास से विश्वास की और ले जाता है।
4. **कलवा** – यह बाल लघु उपन्यास है। यह मौलिक बालोपयोगी किशोरोपयोगी उपन्यास है। इसका स्त्रोत पंचतंत्र है इस उपन्यास मे मन्नू जी ने जीवन के कटु सत्यो को उजागर किया है इसकी कथावस्तु चमार के बेटे के जीवन से संबंधित है।
5. **एक इंच मुस्कान** – इस उपन्यास मे टुटते आत्मीय संबंधो को सांकेतिक रूप से प्रकट किया गया है। इसमे वर्णनात्मक आत्मकथानक पत्रात्मक शैली के प्रयोग से मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया है जो प्रभावी है।

तृतीय अध्याय

उषा प्रियवदा व मन्नू भंडारी के उपन्यासो मे नारी की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्याऐं

उषा प्रियवदा व मन्नू भण्डारी ने अपने उपन्यासों में नारी की समाज में जो समस्याएँ है।उनको उजागर किया है। समाज की कुण्ठित सोच न केवल आज बल्कि सदियों से नारी समाज के विकास में बाद्धित रही है। समाज ने नारी के लिये कुछ सीमाऐं तय कर दी है जो उनकी नारी विरोधी सोच को उजागर करती है।

मन्नू जी के उपन्यासो में भी नारी के शोषण को सरल रूप से चित्रित किया गया। समाज अपनी दूषित सोच के कारण सदा ही नारी उन्नति विरोधी रहा हैं पितृसत्तात्मक समाज में नारी का वर्चस्व असहाय है जो पुरूष को पशु बना देता है।

आर्थिक रूप से कमजोर व दूसरों पर आश्रित रहने के कारण भी नारी शोषण का कारण रहा है। नारी अस्मिता में समाज की संवेदना व यथार्थ धरातल पर उसका व्यवहार समाज के दोगले चरित्र को प्रकट करता है। यह सल्य दोनों उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों व अपने साहित्य में प्रकट किया है। जो सहज ही पाठक को अपनी और आकर्षित करता है। उषा जी व मन्नू जी ने स्त्री के शोषण को हर स्तर पर बड़े व्यंग्यात्मक और यथार्थ का जामा पहनाया है। जो न केवल इनके स्त्री केन्द्रित साहित्य बल्कि मन की आकुलाहट को भी व्यक्त कर देता है। पचन खम्भे लाल दीवारे मे सुषमा अपनी समस्त इच्छाओं को त्याग कर अपने परिवार को पालने के लिए स्वय को एकांकी जीवन वाली बना लेती है और उसका परिवार केवल अपने बारे में सोचता है सभी मिलकर उसका मानसिक शोषण करते है।

सांस्कृतिक परिवेश जो आज व पूर्व में नारी जीवन पर अनेक प्रतिबंध लगाता है। इसका चित्रण भी दोनो उपन्यासकारो ने किया है। पाश्चात्य परिवेश में भारतीय नारीयों का अपने – आपको ढालने का प्रयास अस्थिरता व द्वन्द को जन्म देता है। परम्पराओं की बेडियों ने नारी समाज का पतन किया है जिसकी एक हूक हमें नारी पात्रों के देखने को मिलती है।

चतुर्थ अध्याय

उषा प्रियवदा व मन्नू भण्डारी के उपन्यासो मे नारी का विद्रोह स्वर

उषा प्रियवदा के उपन्यासो मे नारी का शोषण व विद्रोह मुखरीत हुआ है। इनके उपन्यासों में नायिकाऐं व अन्य पात्र शोषण के प्रति विद्रोह करते प्रतीत होते है।

पचपन खम्भे लाल दीवारे की नायिका सुषमा अपने परिवार द्वारा किये जा रहे मानसिक शोषण का कही ना कही विद्रोह करती है जो उसकी झुंझलाहट व क्रोध से प्रकट हो जाता है।

शेषयात्रा की अनु अपने पति द्वारा किये गये अत्याचारो और समाज द्वारा लगाये गये प्रतिबंधो को तोडती है। और सम्मान से जीने का सकल्प ले डॉक्टर बनकर दूसरा विवाह कर लेती है। अपने जीवन से संबंधित फैसले स्वयं लेती है। उसने समाज की कुरीतियों का विरोध किया एवं संघर्ष किया।

मन्नू जी के उपन्यासों में भी नारी अपने प्रति किये जा रहे शोषण व अत्याचारो का विरोध करती प्रतीत होती है।

नारी समाज के प्रति किये जा रहे शोषण व अत्याचारों का विद्रोह उपन्यास के पात्रों में हमें कही न कही दृष्टित हो जाता है। नारी समाज के प्रति संवेदना उषा जी के स्वयं के जीवन में हुये भेदभाव को स्थापित कर देते है।

उषा जी व मन्नू जी दोनो ने अपने भावों को विद्रोह को अपने पात्रों मे साकार कर दिया। उषा प्रियवदा व मन्नू भंडारी की नायिकाएं एक और अपने

को पुरूष प्रधान समाज में स्थापित करने का प्रयास करती हुई दिखाई देती है तो एक और इस व्यवस्था पर प्रहार करती प्रतीत होती है।

दोनो उपन्यासकारों ने स्त्री के प्रति हो रहे शोषण को बडे व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। उषा जी के उपन्यासों मे नायिकाऐं अन्तद्वन्र्द से घुटती हुई व इसका विरोध करती हुई दिखाई देती हैं।

दोनो उपन्यासकारों के उपन्यासो में समाज द्वारा गढी परिपाटी को तोडती दिखाई देती है। इनके नारी पात्र जो न केवल इनके संघर्ष व आत्मबल व दृढता को भी व्यक्त करता है।

शोध के उद्धेश्य

1. साहित्य के इतिहास मे नारी के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. उषा प्रियवदा व मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व व कृतित्व का अध्ययन।
3. उषा प्रियवदा व मन्नू भंडारी के उपन्यासो में नारी की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्याओं का अध्ययन।
4. उषा प्रियवदा व मन्नु भंडारी के उपन्यासों में नारी के विद्रोही स्वर का अध्ययन।

शोध विधि

1. प्रस्तावित शोध कार्य के लिए सर्वप्रथम उपन्यास साहित्य का अध्ययन करना अपेक्षित होगा। जिसमे प्राचीन हिन्दी उपन्यास से लेकर आधुनिक हिन्दी उपन्यासो की विकास यात्रो को समझना होगा।
2. नारी अध्ययन के साथ–साथ स्वातंन्त्रयोत्तर उपन्यासो का अध्ययन कर उपन्यास के तत्वो के विभिन्न पहलुओ को समझकर उनका समाज के परीक्षण मे अध्ययन करना।

3. उषा प्रियवदा व मन्नू भण्डारी के उपन्यासो से नारी से संबंधित साहित्य का अध्ययन करके उपन्यास के विभिन्न पहलुओ को समझकर अध्ययन करना होगा।
4. मन्नू भण्डारी व उषा प्रियवदा के उपन्यासो मे नारी से संबंधित कार्यो का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।
5. नारीयो की शोध विधि से प्रस्तावित शोध प्रबंध एक महत्वपूर्ण प्रबंध बन सकेगा।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

1. ज्ञान के विकास मे सहायक।
2. उद्धेश्य प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम किया।
3. समाज को नवीन ज्ञान एवं गति प्रदान करना।
4. जीवन के उद्धेश्य की प्राप्ति का सरल उपाय देना।
5. समाज सुधार मे सहायक।
6. शोध या अनुसंधान मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है।
7. शोध या अनुसंधान सामाजिक विकास मे सहायक।
8. शोध या अनुसंधान से व्यावहारिक समस्याओ का समाधान होता ह्रै।
9. शोध या अनुसंधान ज्ञान के भण्डार को विकसित एवं परिमार्जित करता है।
10. शोध या अनुसंधान विविध विषयो में गहन और सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करता है।
11. समाज मे ज्ञान एवं चेतना के आधार पर उपन्यास विद्या मे नारियो के संदर्भ मे एक नई सोच विकसित करना।

पंचम अध्याय

निष्कर्ष

उपन्यास साहित्य की व्यापक एवं परिष्कृत विद्या होने के कारण तुलनात्मक अध्ययन के रूपायन मे अन्य साहित्यिक विधाओ की अपेक्षा विस्तृत एवं सशक्त है। उपन्यास विधा मे एक कथा धारा के साथ–साथ अन्य कथाधाराऐ भी चल सकती है।

देश की राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियां उपन्यास विधा को प्रभावी रूप से वर्णित करने वाली महत्वपूर्ण परिस्थितियां है।

उषा जी के उपन्यास सामाजिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इनके उपन्यास पुरानी वैचारिक धारणाओं को नवीन धारणाओ की ओर ले जाने मे सक्षम है।

वर्तमान समय मे उपन्यास विधा भारतीय समाज व साहित्य दोनो स्तरो पर अपनी पैठ मजबूत कर ली है।

मन्नू जी ने आधुनिक हिन्दी साहित्य की जन जीवन की समस्याओ को सीधा जोडा है, और सामाजिक उपन्यासो मे खोखलेपन को अभिव्यक्त किया है। मन्नू जी के उपन्यासो मे चेतना द्वंद, मोहभंग को विविध रूप से उजागर किया है जिसके द्वारा वे समाज की खोखली मान्यताओं विद्रुपताओ विषमताओं, शोषण, अन्याय, भ्रष्टाचार पर प्रहार करते है। और त्याग संघर्ष, स्नेह संबंधो का महत्व आत्मसम्मान की रक्षा जैसे उदात तत्वो की व्यंजना तथा राष्ट्रप्रवृतियों व अन्याय के विरूद्ध न्यायिक भावो की चेतना को बलवती प्रदान करते है।

उषा प्रियवदा के उपन्यासो मे भारतीय जीवन संबंधी अनेकानेक विषयो तथा तत्संबंधी समस्याओ को स्थान मिला है। इन्होने उन विषयो का प्रतिपादन शिष्ट व्यंग्य व मार्मिक ढंग से किया है। उषा जी ने अपनी छटपटाहट व युग मानस को समझाते हुए अपने उपन्यास साहित्य मे नारी की विषम परिस्थितियों

को समझाते हुए उपन्यास इतिहास को संभाव्य भूमिका मे ही चित्रित किया तथा यथासंभव मनोविज्ञान का प्रयोग करते हुए अपने उपन्यासो को यथार्थ के धरातल पर ला पटका है जिसकी अवहेलना मानस बुद्धि न कर सकी।

मन्नू जी ने अपनी रचना धार्मिता के प्रति पूर्णत समर्पित सजग एवं ईमानदार रही है। उनका साहित्य उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचायक है।

मन्नू जी ने अपने जीवनानुभव को भी अपनी लेखनी से उतार दिया है जो साहित्य क्षेत्र मे उन्हे प्रसिद्धि दिला सके मन्नू जी मे राष्ट्रप्रेम बीज बचपन से ही थे जो पिता के प्रोत्साहन से आन्दोलन व लेखन के माध्यम से बाहर आये मानवीय संबंधो व नारी के प्रति इनकी गहरी सहानूभूति रही है। जो इनके पात्रो के माध्यम से व्यक्त हुई। मानवीय मूल्यों में अटूट विश्वास व संवेदना रही है।

मेरे द्वारा शोध कार्य न केवल हिन्दी साहित्य के उपन्यासकारो बल्कि भावी शोधकर्ताओ के लिये अत्यंत उपादेय सिद्ध होगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अनिता राजुकर, कथाकार मन्नूभण्डारी पृ.
2. डॉ.संजय बी.आसोदरियां, भण्डारी और वर्षा अडालजा की कहानियो मे समाज निरूपण पृ.
3. डॉ. दिलीप मेहरा, मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प पृ,
4. मन्नू भण्डारी एवं राजेन्द्र यादव, एक इंच मुस्कान पृ.
5. डॉ. बीना ईप्पन मन्नू भण्डारी का रचना संसार पृ. 1,10
6. समकालीन हिन्दी उपन्यास, समय और संवेदना – डॉ. वि.के. अब्दुल पृ. जलील डॉ. पी रवि पृ.
7. शेष यात्रा – उषा प्रियवदा
8. अन्तर्वशी – उषा प्रियवदा
9. साठोतरी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासो मे पात्रो का परिवर्तित मूल्य बोध – डॉ. सीता मिश्र पृष्ठ 16
10. पचपन खंभे लाल दिवारे – उषा प्रियवदा
11. हिन्दी उपन्यास एंव कहानी साहित्य – विनोद कुमार नागर पृ. 1
12. हिन्दी साहित्य कोष (भाग 1) डा. धीरेन्द्र वर्मा पृ. 123
13. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव और विकास – डॉ. बैचेन पृ.
14. जिन्दगी और गुलाब के फूल – उषा प्रियवदा – अनुक्रमणिका
15. उषा प्रियवदा के कथा साहित्य मे नारी चेतना – शारदा पटेल 31
16. डॉ. उमा केवलराम – मन्नू भण्डारी की कहानियों मे आधुनिकता बोध पृ. 13
17. हिन्दी गद्य स्वरूप और विकास – डॉ. सत्यपाल पृ. 14
18. हिन्दी उपन्यास : समकालीन विर्मश – डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी पृ. 155
19. उषा प्रियवदा के कथा साहित्य मे व्यक्त नारी चेतना – शारदा पटेल पृ. 12
20. मन्नू भण्डारी का रचनात्मक अवदान – सुधा अरोडा 2012
21. मन्नू भण्डारी सृजन के शिखर – सुधा अरोडा 2010

22. उपनिवेश मे स्त्री मुक्ति कामना की दस वार्ताए – प्रभा खेतान 2009
23. स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य – क्षमा शर्मा 2008
24. महिला साहित्यकारो का नारी चित्रण – रत्नकुमारी वर्मा
25. आधुनिक हिन्दी उपन्यासो मे नारी के विविध रूपो का चित्रण – डॉ. मोहम्मद ढेरीवाला चिंतन प्रकाशन, कानुपर 2001
26. हिंदी के सामाजिक उपन्यासो मे नारी – डॉ. रेखा कुलकर्णी पृ. 39
27. हिन्दी महिला उपन्यासकारो मे नारी अस्मिता डॉ. हरिओम 2015
28. नारी विमर्श के संदर्भ मे मन्नू भण्डारी का लेखन – 2013 सचिन कुमार
29. महाभोजन उपन्यास पर समीक्षा – डॉ. अनिता राजुकर 2018
30. स्त्रीत्वादी विमर्श – क्षमा शर्मा 2012
31. स्त्री विमर्श विविध पहलू – कल्पना शर्मा 2009
32. स्त्री अस्मिता और विचारधारा – जगदीश्वर चतुर्वेदी 2004
33. हिन्दी साहित्य मे महानगरीय नारी जीवन – डॉ. बाबासाहेब को काटे 2003
34. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार – डॉ. वैशाली देशपाण्डे 2007
35. औरत : कल आज और कल – आशारानी व्होरा 2005
36. साहित्य मे नारी योगदान – उमा अर्पिता 2015
37. एक इंच मुस्कान मे नारी मुक्ति के स्वर – डॉ. विनिता चौरासिया 2014
38. नारी अस्मिता का विमर्श तथा प्रभा खैतान के उपन्यास छिन्नमस्ता के संदर्भ मे – कंचन भणावत 2017
39. स्वामी उपन्यास की नायिका सौदामिनी – डॉ. उत्तम पटेल 2016
40. स्त्री मुक्ति और अस्मिता की पहचान – डॉ. प्राची सिंह 2017